जय जय महाश्रमण

नारीलोक

अध्यक्षीय कार्यालय :
श्रीमती कुमुद कच्छारा
अम्हेर ज्वेलरी, ऑफिस नं. 6
लक्ष्मी भुवन, आनन्दजी लेन
रसिकलाल ज्वेलर्स के सामने
एम.जी. रोड़, घाटकोपर (ई)
मुम्बई - 77
मो. : 9833237907
e-mail : kumud.abtmm@gmail.com

अंक 255 | पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) | सितम्बर 2019

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

आत्मिक उन्नयन की रहे भावना, शुद्ध मन से करे क्षमायाचना

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

पर्वाधिराज पर्युषण एवं संवत्सरी महापर्व की आराधना करते-करते आप सभी ने आत्म निरीक्षण, आत्म परीक्षण एवं आत्मावलोचन कर एक दूसरे से क्षमायाचना भी किया होगा। क्षमा तप के महत्व को उजागर करते हुए कहा गया है कि,

वीतराग से बड़ा न कोई देवता, मुक्ति से बड़ा न कोई पद।
शत्रुजंय से बड़ा न कोई तीर्थ, क्षमा से बड़ा न कोई तप।।

क्षमा को सर्वोत्कृष्ट तप बताया गया है। क्षमायाचना स्वयं की गलती स्वीकार कर तथा दूसरों की गलतियों को माफ कर परमात्मा की पराकाष्ठा तक ले जाने वाली परम तपस्या है, एक स्वस्थ परंपरा है। इस परंपरा का निर्वहन करते हुए आप सभी से शुद्ध अंतःकरण से करती हूँ खमत खामणा। आप सभी के आत्मिक उन्नयन की शुभ भावना, आध्यात्मिक उत्कर्ष की मंगलकामना।

एक उपासिका होने के नाते पर्युषण के दिनों में प्रतिवर्ष प्रायः यात्रा में रहने का क्रम संभवतः बना रहता है। उस समय हम गुरु के संदेश वाहक बनकर क्षेत्रों में जाते हैं तो विशेष दायित्व का निर्वहन करते हुए स्वयं के आत्मनिरीक्षण के क्रम में कहीं-न-कहीं प्रमाद रह जाता है। बहनों, इन दो वर्षों में संस्थागत दायित्व का निर्वहन करते हुए वर्ष भर यात्रा करने के पश्चात् आठ दिन पर्युषण महापर्व में निश्चिंत होकर अपने घर में बैठकर अपने भीतर गहराई से झांकने का अवसर जब मुझे मिला तब मैंने भी इसका मूल्य आंकते हुए बिना किसी प्रमाद के लाभ उठाने का प्रयास किया तो वास्तव में मुझे अनुभव हुआ कि हम जाने-अनजाने, चाहते-अनचाहते, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से न जाने कितने अशुभ कर्मों का बंधन कर लेते हैं जो कि हमें नहीं करना चाहिए। सच कहूं बहनों मैंने जब संस्थागत सफर की जीवन के सफर से तुलना करने का प्रयास किया तो कई तथ्यों में समानता नजर आई तो कई तथ्यों में बड़ा अन्तर। संस्थागत दायित्व के सफर का प्रारंभ एवं अंत प्रायः निर्धारित होता है जबकि हमारे जीवन के सफर का प्रारम्भ निर्धारित होने की संभावना हो सकती है पर अंत नहीं। वस्तुतः जो पूर्व निर्धारित होता है उसे हम योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण तैयारी के साथ अंजाम देने का प्रयास करते हैं परंतु जो क्रम निर्धारित नहीं है उसके प्रति लापरवाही बरत लेते हैं।

यदि मैं जैन दर्शन की दृष्टि से चिंतन करती हूँ कि जीवन की यात्रा में प्रारम्भ या अंत में से किसका महत्व अधिक है तो स्पष्ट है कि जीवन में प्रारम्भ की अपेक्षा अंत का अधिक महत्व है। यदि मैं संस्थागत सफर की समीक्षा करती हूँ तो मुझे लगता है प्रारंभ और अंत दोनों ही महत्वपूर्ण है फिर भी एक सामान्य कहावत के आधार पर भी अंत अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है कि **अंत भला तो सब भला**। बहनों! आपकी यात्रा का शुभारम्भ है और हमारी यात्रा का समापन। आप सोचें कि पिछले अध्यक्ष ने जितना कार्य किया उससे चौगुना मुझे करना है तो गलत है और हम सोचें कि हमारे कार्यकाल से आनेवाले अध्यक्ष का कार्यकाल अच्छा क्यों हो? यह भी गलत है। निवर्तमान अध्यक्ष एवं नव मनोनीत अध्यक्ष स्वस्थ समीक्षा करें, प्रतिस्पर्धा नहीं। दोनों टीम मिल बैठकर समीक्षात्मक चिंतन करते हुए संस्था के हित में अनुभवों का आदान-प्रदान कर आगे बढ़े। गुटबाजी न करें, हर कार्यकर्ता को सम्मान दें, प्रत्येक सदस्य की भावना को समझे, प्रमोद भावना का परिचय दें, सबको साथ लेकर चलें, विवाद में नहीं उलझे, आलोचनाओं से दूर रहे, प्रोत्साहन में कमी न रखें। दायित्व के

अध्यक्षीय

सफर में कदम दर कदम आगे बढ़े, जल्दबाजी न करें। यदि आप कतार में है तो प्रतीक्षा करें, किसी को लांघकर आगे जाने का प्रयास न करें।

हम कुछ दिन के लिए जब बाहर जाने वाले होते हैं तब यात्रा की तैयारी प्रारंभ करते हैं तो सबसे पहले सूटकेस निकालकर उसमें कपड़े जमाते हैं। उस समय सबसे बहुमूल्य परिधान जिसे कुछ दिन बाद उपयोग में लेना है उसे सबसे पहले सूटकेस में नीचे रखते हैं फिर अन्य परिधान रखकर अंत में तौलिया या चादर रखकर सूटकेस बन्द कर देते हैं। गंतव्य स्थान पर पहुँचते ही अचानक पता चलता है कि एक भव्य समारोह के आयोजन में जाना है और उसके लिए बहुमूल्य परिधान की अपेक्षा है। अतः उसे निकालने के लिए जैसे ही हम सूटकेस खोलते हैं तो अन्त में रखी चादर या तौलिया सबसे पहले निकलता है और पहले रखे हुए बहुमूल्य परिधान आखिर में। बहनों, लिखने या पढ़ने में यह बात बहुत साधारण सी हो सकती है मगर इसमें जीवन का मूल्यवान रहस्य छिपा हुआ है कि Life is like Suitcase अर्थात ये जीवन सूटकेस की भांति है। आत्मा जब परलोक की यात्रा करेगी तब जीवन सूटकेस खुलने पर अन्त में रखा गया परिधान सबसे पहले पहनने में आयेगा।

बहनों, आप सोचेंगे कि आत्मा की परलोक की यात्रा का हमारे कार्यकाल से क्या लेना देना? जी हाँ! बिल्कुल लेना देना है। जिस प्रकार आत्मा परलोक की यात्रा करेगी तब पल-पल के कर्मों का लेखा-जोखा होगा ठीक उसी प्रकार हमारे कार्यकाल का भी समापन होगा तब प्रामाणिकता के साथ हर गतिविधि का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना होगा। हम हमारे कार्यकाल का प्रारंभ बहुत अच्छा होने पर अहंकार नहीं करे और न ही यह सोचकर निश्चिंत हो जाए कि अन्त भी अच्छा ही होगा। हमें अंतिम क्षणों तक सद्कर्म एवं सद्व्यवहार करते रहना चाहिए। मैं स्वयं भी इन दो वर्षों की यात्रा की समीक्षा कर रही हूँ तो मुझे ऐसा लग रहा है कि हमारा प्रारंभ एवं अंत दोनों ही सुखद प्रतीत हो रहा है पर बहनों यह मेरा नजरिया है। हो सकता है अंतिम चरण में आपको मेरा व्यवहार ठीक नहीं लगा हो या हमारे किसी निर्देश से आपके दिल को ठेस पहुँची हो। नहीं चाहते हुए भी हमें संस्था के हित को ध्यान में रखते हुए आपको कोई ऐसा आदेश-निर्देश देना पड़ा हो जो आपके मन के बिल्कुल भी अनुकूल नहीं हो और इन कारणों से हमारे बीच परस्पर रागद्वेष की भावना आई हो। यदि वास्तव में ऐसा कुछ हुआ हो तो मैं हृदय की अनन्त गहराइयों से आप सभी से शुद्ध अंतःकरण पूर्वक खमत खामणा कर अपनी आत्मा को निर्मल व पवित्र बनाने का प्रयास कर रही हूँ। क्योंकि हम सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक या सांसारिक समस्त दायित्वों का निर्वहन करते-करते अंत समय में यदि आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा में जागरूक नहीं रहेंगे तो लक्षित मंजिल तक पहुँचना मुश्किल हो जायेगा। जैसे सागर के भयंकर तूफान से निकलकर किनारे पहुँचने वाले नाविक को अत्यंत सावधानी रखनी पडती है क्योंकि किनारे की चिकनी मिट्टी समस्त संघर्षपूर्ण यात्रा को निष्फल बना देने में सक्षम है। यदि पायलट हवाई जहाज की उड़ान भरते वक्त सचेत रहे किन्तु उसे उतारते समय सावधानी न रखे तो दुर्घटना निश्चित है। ठीक वैसे ही बहनों! सफर चाहे दायित्व का हो या जीवन का, हमें प्रारंभ से अंत तक पूर्णतया जागरूकता के साथ कदम आगे बढ़ाना है तभी होगा हमारे आचार, विचार, व्यवहार, संस्कार और आत्मा का असली उन्नयन।

बहनों, सितम्बर माह का तो प्रारंभ से लेकर अंत तक एक-एक दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत हो रहा है। गणेश चतुर्थी से प्रारंभ इस माह में मैत्री महोत्सव के साथ-साथ आचार्य श्री कालूगणी का 83वां स्वर्गवास दिवस है तो नारी उन्नायक आचार्य श्री तुलसी का 26वां विकास महोत्सव। इतना ही नहीं मोहरम के साथ ही आ रहा रहा है हमारे आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का 217 वां चरमोत्सव और फिर होगा तेरापंथ धर्मसंघ की महिला शक्ति का वार्षिक महोत्सव ''उन्नयन'' और माह के अंत में होगा शक्ति की देवी की आराधना का पर्व नवरात्रि। महिला शक्ति के वार्षिकोत्सव में हमें इंतजार है आपसे प्रत्यक्ष रूबरू होने का। हम आतुर है आपका आत्मीय भावों से स्वागत करने के लिए। दो वर्षों तक आपने हमारा स्वागत, सम्मान व आथित्य सत्कार किया, अब समय आ गया है हम आपके कर्तृत्व का उचित सम्मान करें, आपकी खातिरदारी करे। हम तैयार है आपकी जिज्ञासाओं का समाधान करने के लिए। आपका सहयोग हमारी ताकत है और आपका विश्वास ही हमारी ढाल है। आओ बहनों ! हम सब मिलकर संगठन की डोर में बंधकर दिनांक 16, 17, 18 सितम्बर 2019 को ''उन्नयन'' की दिशा में प्रस्थान करें।

उन्नयन हो आत्म का ये भावना रहे, उत्कर्ष हो अध्यात्म का ये कामना रहे।

ज्योतिर्मय संघ पाया तेरापंथ है, गणमाली महाश्रमण महासंत है।।

आपकी अपनी

कुमुद कच्छारा

महामंत्री के उद्‌गार

प्रिय बहनों

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के इतिहास में अवकाश का एक और पृष्ठ जुड़ने जा रहा है। दायित्व और समर्पण की कलम से आप सभी ने सृजन के सतरंगी चित्र उकेरे हैं जो प्रतिवेदन में लिपिबद्ध होने के लिए तैयार है। आप सबकी कर्मजा शक्ति देखकर मैं अभिभूत हुई हूँ। इस अधिवेशन में आपके कर्तृत्व की फलश्रुति का जश्न भी हम और आप मिलकर मनायेंगे, लेकिन जश्न ऐसा हो कि लक्ष्य ओझल ना होने पाये। कार्यकर्ता का पहला आभूषण है समर्पण, समर्पण के घेरे में सिर्फ कर्म होता है। फल की कामना नहीं होती, स्वार्थ की परछाई नहीं होती। सर्वप्रथम, प्रतिस्पर्धा की भावना को आपके समर्पित भाव से किये गये कार्यों पर हावी न होने दें। आपने बहुत अच्छा कार्य किया है, लेकिन आपसे बेहतर भी कोई कर सकता है, यह ख्याल सदैव रहे। अगर विजेता की सूची में स्वयं को ना देखें तो नकारात्मक विचार कभी ना लाये। आपकी मेहनत से आपकी कार्यशैली परिष्कृत हुई है और आपकी संस्था का उन्नयन भी हुआ है।

बहनों , दो वर्ष की इस यात्रा में साथ चलते-चलते चाहे अनचाहे हुई भूलों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मंत्री प्रतिवेदन में आपके द्वारा संपादित कार्यों को लिपिबद्ध करने में कहीं कोई कमी रही हो तो करबद्ध क्षमा याचना करती हूँ। हर पल हर क्षण सोते और जागते कहूं तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आपके द्वारा निष्पादित कार्यों को लिखने में एक निर्णय लेने में प्रतिपल जागरूक रहूँ, फिर भी भूल होना स्वाभाविक है। अंतःकरण से क्षमा याचना।

नीलम सेठिया

महामंत्री

44वें राष्ट्रीय अधिवेशन ''उन्नयन'' में प्रदान किये जाने वाले गौरवशाली पुरस्कार

आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार

श्रीमती सुमित्रा महाजन

(Former Speaker - Lok Sabha)

सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार

श्रीमती सोनिया जैन (जयपुर - बैंगलुरु)

सुश्री श्वेता भंसाली (लाडनूं - दिल्ली)

श्राविका गौरव अलंकरण

श्रीमती प्यारीदेवी पारसमलजी गादिया

(गुड़ा रामसिंह - बैंगलुरु)

ऊर्जावाणी

क्षमा वही व्यक्ति कर सकता है जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहज सरलता हो और जीवन को अभिभूत करने वाली मृदुता हो।

जो क्षमा करना नहीं जानता वह न निज पर शासन कर सकता है न अन्य व्यक्तियों पर।

शब्दोच्चारण के साथ मन में जमा हुआ शत्रुता का भाव समाप्त हो जाना ही क्षमायाचना है।

क्षमाशील वह होता है जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिंतनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की छलना न करने का संकल्प करता है।

–आचार्य श्री तुलसी

अरब के रेतीले मैदान में एक अमीर ऊँट पर बैठ कर जा रहा था। उसका नौकर पीछे बैठा था। उसके हाथ में छाता था अमीर को धूप न लगे। उसके हाथ में पंखी थी ताकि अमीर को पसीना न आए। दोनों मजे से जा रहे थे। कुछ ही दूर गए होंगे कि उनकी दृष्टि चल रहे एक फकीर पर पड़ी। वह अकेला था, कोई साथी नहीं था। चिलचिलाती धूप में वह पैदल जा रहा था। उसकी चाल में मस्ती थी। अमीर ने उसको देखा। अहंकार जाग उठा। वह बोला – अरे फकीर! इतनी तेज धूप में ऐसे ही चल रहा है, बिना मौत मर जाएगा। फकीर मस्त था। वह बोला – फकीर कभी नहीं मरेगा। मरेगा तो अमीर मरेगा। ऊंट आगे बढ़ गया। फकीर अपनी मस्ती में पीछे–पीछे चलने लगा।

कुछ समय बीता। तेज आँधी आई। अमीर और उसका नौकर दोनों सम्भल नहीं सके। दोनों नीचे गिरे और मर गए। ऊंट लड़खड़ाकर गिर पड़ा और मर गया।

फकीर निकट आया। पहचान गया। बोला – अरे! मेरे जैसे ही तो यह आदमी था। पर अमीर के अहं ने मेरे मित्र को बेमौत मार डाला। व्यक्ति अपने अहं के कारण अपने आपको बहुत बड़ा मान लेता है और दूसरों को छोटा मानता है। इसलिए अहंकारी नहीं क्षमाशील बने।

–आचार्य श्री महाप्रज्ञ

क्षमायाचना का महापर्व व्यक्ति के मन के भीतर व्याप्त कषाय को मंद करने का एक उपक्रम है। आवश्यकता इस बात की है हम सभी लोगों से अतीत में जाने–अनजाने में हुई त्रुटियों के लिए खमत खामणा कर क्षमा मांगे और आने वाले समय के लिए बेहतर करने का प्रण ले। 'खामेमि सव्व जीवे – सव्वे जीवा.....'' श्लोक का प्रतिदिन एक बार चितारना होना चाहिए। खमत खामणा से आत्मा की विशुद्धि हो सकती है। क्षमापना करने से चित्त में प्रसन्नता की अनुभूति होती है। सभी जीवों के साथ मैत्री का भाव रखने की आवश्यकता है। आत्मभाव पुष्ट करने की दृष्टि से भाव की विशुद्धि होना जरूरी है।

–आचार्य श्री महाश्रमण

संवत्सरी महान पर्व है। इसकी तुलना किसी अन्य पर्व से नहीं की जा सकती। मन में व्याप्त अहंकार के पहाड़ों को ढहाने की व्यक्ति को आवश्यकता है। क्षमा व्यक्ति के भीतर फैले जहर को अमृत बनाने का माध्यम है। हमारे यहाँ तीन चिकित्सा पद्धति प्रचलित है। एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद। क्षमा भी एक चिकित्सा है, जो व्यक्ति को भीतर से स्वस्थ और मजबूत बनाती है। हमें कायाकल्प की प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है। हमारा जीवन शांति व साधना के पथ पर अग्रसर होना चाहिए।

– साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा

करणीय कार्य - सितम्बर

जीवन के हर मोड़ पर सफलता प्राप्त करना हर व्यक्ति का सपना होता है परंन्तु सफलता उसी को मिलती है जो उस सपने को साकार करने का संकल्प लेता है, निरंतर पुरुषार्थ करता है और खुद पर विश्वास रखता है। इतना ही नहीं हर वक्त नये चिंतन के साथ कुछ नया करने का जज्बा रखते हुए लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है वही सफलता को हासिल करता है। बहनों इस माह

WE connect
Communicate Collaborate Create

के अन्तर्गत आयोजित करें....

Connection with Success

सर्वोत्तम प्रयास, खुद पर विश्वास - निश्चित सफलता आपके पास

इस कार्यशाला में आप जानेंगे रहस्य सफलता की चाबी का जिससे विकास द्वार के ताले खुल जाते हैं

S Set Your Goal - लक्ष्य का निर्धारण।

U Understand your weakness and strength - स्वयं की कमजोरी एवं शक्ति को पहचानें।

C Create New Ideas & Update Yourself - नवीन व कलात्मक चिंतन से स्वयं को Update रखे।

C Continued Efforts - निरंतर पुरुषार्थ करते रहे।

E Encourage Yourself - स्वयं को प्रोत्साहित करे।

S Self Confidence and Self Discipline
आत्मविश्वास एवं आत्मानुशासन को बढ़ाएं।

S Stop Negativity & Develop Positivity
नकारात्मकता को रोके तथा सकारात्मकता का विकास करे।

K Kindness & Honesty goes a long way
सहृदयता व नैतिकता से सच्ची सफलता।

E Easy going and adjustable
सरलता एवं सामंजस्यपूर्ण व्यवहार से सबका मन जीते।

Y Your Dream will come true definitely
इस चाबी को अपनाने से आपका सपना होगा अवश्य साकार।

बहनों ! इस कार्यशाला में आपको Story Telling Competition का आयोजन करना है जिसमें "Success Stories of Well-known Personalities" (सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की सफलता की कहानियां) प्रस्तुत करनी है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय को स्थानीय स्तर पर पुरस्कृत करें।

इस माह का संकल्प - प्रतिदिन नौ बार इस शब्दावली का उच्चारण करें -
''सब मेरे मित्र है, मैं सबके साथ मैत्री का प्रयोग करूंगी''

महिला मण्डल

करणीय कार्य - अक्टूबर

'फिर एक बार - प्लास्टिक का बहिष्कार'

लाल किले की प्राचीर से मोदीजी ने किया आह्वान
सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त बनाएं अपना प्यारा हिन्दुस्तान
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल भी चला रहा ये अभियान
आओ बहिनों हम ले संकल्प, करें चरणों को गतिमान

प्रिय बहिनों,

आप सभी को जानकारी होगी कि देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने विगत 15 अगस्त 2019, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से देशवासियों को संबोधित करते हुए ''सिंगल यूज प्लास्टिक'' से देश को मुक्ति दिलाने की दिशा में कदम बढ़ाने का आह्वान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल भी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद एवं मातृ हृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रेरणा से राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व के निर्वहन में निरंतर गतिमान है। इसी उद्देश्य से अभातेममं द्वारा वर्ष 2017 में "Say No to Plastic (Plastic Free Week) अभियान देशभर में विभिन्न शाखा मंडलों के माध्यम से चलाया गया था जिसके सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हुए।

इसी क्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के ''सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त भारत'' के स्वप्न को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अभातेममं आगामी 2 अक्टूबर को ''फिर एक बार, प्लास्टिक का बहिष्कार'' महाअभियान (सप्त दिवसीय) का आगाज करने जा रहा है। इस महाअभियान से अभातेममं के समस्त शाखा मंडल अनिवार्य रूप से जुड़ने का प्रयास करें। इस महाअभियान से जुड़ी विस्तृत जानकारी एवं कार्यक्रमों की रूपरेखा अतिशीघ्र आप सभी को अभातेममं की Website, Mobile App, Whatsapp आदि के माध्यम से उपलब्ध करा दी जाएगी।

कन्या मण्डल

करणीय कार्य - सितम्बर

बेटियों के बढ़ते कदम - फहराएं विकास के परचम

प्यारी बेटियों

सादर जय जिनेन्द्र !

आप हमारे अभिन्न अंग एवं सुनहरा भविष्य हो। आप सभी नये नेतृत्व, नये जोश, नयी उमंग एवं उत्साह से कुछ करने की चाहत के साथ आगे बढ़ने कटिबद्ध है। अभी-अभी हमने संबोध अधिवेशन में पूज्य प्रवर से ऊर्जा एवं आशीर्वाद का प्रसाद पाया है। पूज्य प्रवर के मंगल पाथेय को जीवन में अपनाकर आप आध्यात्मिकता, नैतिकता, प्रतिबद्धता, दायित्व बोध एवं सहनशीलता जैसे सद्गुणों से जीवन में निखार लाये एवं जीवन को उत्कृष्ट बनाये। आप सभी के साथ का यह दो वर्षों का सफर अत्यन्त ही सुहाना रहा। आपका स्नेह मेरे जीवन की अमूल्य निधि बनकर सदैव मेरे साथ रहेगा। आप इसी तरह निरंतर गतिमान रहे, सभी के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना।

आपकी
मधु देरासरिया

इस माह आयोजित करें कार्यशाला

Sorry..... महकाएं जीवन की क्यारी

प्रशिक्षण के बिन्दु :-

- क्षमा बनाये जीवन को महान
- अहंकार त्यागे, क्षमा मांगे
- छोड़े नफरत की कड़वास, पायें प्रेम की मिठास
- ऐसी कोई जीवन की घटना Share करें जिसमें एक Sorry कहने पर रिश्तों की कड़वाहट दूर हुई हो

44वां राष्ट्रीय महिला अधिवेशन ''उन्नयन'' परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में दिनांक 16, 17, 18 सितम्बर 2019 को बैंगलुरु में

अधिवेशन के संदर्भ में आवश्यक दिशा निर्देश :-

- अधिवेशन की पूर्व संध्या में स्नेह संवर्धन सत्र का आयोजन किया जाएगा। अतः सभी बहनें 15 सितम्बर दोपहर तक ही पहुँचने का प्रयास करें।
- रजिस्ट्रेशन 15 सितम्बर को दोपहर 1.00 बजे ही प्रारंभ हो जाएगा।
- रजिस्ट्रेशन गत वर्ष की भांति चार जोन में होगा अतः सभी क्षेत्र की बहनें अपने-अपने निर्धारित जोन के काउण्टर पर ही अपना रजिस्ट्रेशन करवायें।
- परम पूज्य गुरुदेव ने महति कृपा करके 15 सितम्बर को दोपहर 3.30 बजे अधिवेशन के मंगल शुभारम्भ पर मंगलपाठ हेतु समय प्रदान करवाया है तो सभी बहनें समय पर गणवेश में रैली के रूप में आचार्यप्रवर के प्रवास स्थल पर उपस्थित होगी।
- तत्पश्चात् पुनः रैली के रूप में सभी बहनें असाधारण साध्वी प्रमुखाश्रीजी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर ध्वजारोहण के लिए उपस्थित होगी।
- दिनांक 16 सितम्बर 2019 को प्रातः प्रवचन पंडाल में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सन्निधि में ''आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार'' समारोह का आयोजन किया जायेगा।
- 16 सितम्बर को दोपहर में शाखा सार संभाल के अन्तर्गत एक विशेष जिज्ञासा-समाधान सत्र का आयोजन होगा जिसमें राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्षों द्वारा बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जायेगा।
- 16 सितम्बर को सायंकालीन सत्र में महाप्रज्ञ प्रबोध प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आकर्षक विधा से आयोजन होगा। **भाग लेनेवाली बहनें कृपया 10 सितम्बर तक श्रीमती रमण पटावरी को अपना नाम नोट करवा दें।** 50 से अधिक प्रतिभागी होने पर लिखित प्रतियोगिता करवाई जाएगी एवं 50 बहनों का चयन किया जायेगा।
- दिनांक 17 सितम्बर 2019 को दोपहर में 1.15 बजे ही साधारण सभा का आयोजन होगा। ठीक समय पर कार्यवाही प्रारंभ कर दी जाएगी। बहनें काउण्टर पर साधारण सभा रजिस्टर में अपने हस्ताक्षर करके ही कार्यक्रम स्थल में प्रवेश करें। नये अध्यक्ष का मनोनयन ठीक 2.15 बजे हो जायेगा अतः बहनें समय का पूर्णतया ध्यान रखें।
- दिनांक 18 सितम्बर 2019 को प्रातः प्रवचन पंडाल में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सन्निधि में ''श्राविका गौरव'' एवं ''प्रतिभा पुरस्कार'' सम्मान प्रदान किए जाएंगे तथा दायित्व हस्तातंरण एवं नव मनोनीत अध्यक्ष व टीम का शपथ ग्रहण समारोह भी रहेगा।
- प्रत्येक सत्र में उपस्थिति एवं गणवेश अनिवार्य है। कोई विशेष कारण हो तो अपनी क्षेत्रीय प्रभारी बहन या राष्ट्रीय पदाधिकारी की जानकारी में अवश्य लायें। प्रायः सभी सत्रों के दौरान पारितोषिक वितरण का क्रम रहेगा।
- अधिवेशन के प्रारंभ से अंत तक मर्यादा एवं अनुशासन का पूरा ध्यान रखें।

15वाँ राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन ''संबोध''

परम पूज्य आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त पावन संबोध

आदमी जीवन में विकास करे। छोटी उम्र वालों के सामने संभावित लम्बा भविष्य हो सकता है। उन्हें अपने जीवन में मजबूती को पाने और अच्छा विकास करने का चिंतन व प्रयास करना चाहिए। उनके जीवन में ज्ञान का विकास भी होना चाहिए। ज्ञान लौकिक भी होता है। जैसे – एम.बी.ए., इंजीनियर आदि बनने के लिए किया जाने वाला ज्ञान। संसार में लौकिक ज्ञान का भी महत्व है। एक ज्ञान होता है – अध्यात्म विद्या का ज्ञान। आदमी अध्यात्म विद्या का ज्ञान भी अर्जित करने का प्रयास करे। जीवन में अच्छे संकल्प भी रहने चाहिए। जैसे – चोरी नहीं करना आदि। संकल्प एक प्रकार का सुरक्षा कवच होता है। कन्याओं को भी सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए। हाँ, वे कुछ आगार रख सकती हैं कि विशेष स्थिति में संप्रदाय बदलना भी पड़े तो उसका आगार है।

व्यवहारिक प्रशिक्षण का भी अपना उपयोग होता है कि दूसरों के प्रति आदमी का व्यवहार कैसा होना चाहिए। व्यवहार में भी आध्यात्मिकता का पुट रहता है तो वह अच्छा बन सकता है। बात-बात में आवेश करना व्यवहार की एक कमी होती है। व्यवहार में कषायमंदता होती है तो व्यवहारकुशलता स्वतः झलक सकती है। व्यवहार में शांतिपूर्णता का रहना अच्छा होता है। महिला मंडल की बाइयां कन्याओं को आध्यात्मिकतापूर्ण व्यवहार रखने का प्रशिक्षण देती रहें तो अच्छा विकास हो सकता है। कन्याओं के जीवन में संयम और सादगी का प्रभाव रहना चाहिए। तेरापंथ समाज से जुड़ी हुई जो कन्याएं हैं, वे खूब अच्छा आध्यात्मिक विकास करें। उनके सामने मानों उड़ान भरने के लिए खुला आकाश है और दौड़ने के लिए खुला मैदान है। उड़ने और दौड़ने दोनों में जागरूकता रहनी चाहिए। ऐसी उड़ान न हो कि धरती से बिल्कुल दूर हो जाए और दौड़ना ऐसा न हो कि सामने कौन आ रहा है, इसका भी पता न रहे। दौड़ने में और उड़ने में विवेक रहे तो दौड़ और उड़ान दोनों अच्छी मंजिल पर ले जा सकते हैं। आकाश में उड़ते समय विवेक का प्रकाश साथ में रहे तो अच्छा विकास हो सकता है।

संबोध रैली एवं ध्वजारोहण

परमाराध्य परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की पावन प्रेरणा से बैंगलुरु में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के नेतृत्व में महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु देरासरिया, सह प्रभारी श्रीमती तरूणा बोहरा के दिशा-निर्देशन में दिनांक 5, 6, 7 अगस्त 2019 को 15वाँ राष्टीय कन्या अधिवेशन 'संबोध' का भव्य आयोजन किया गया।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, मंडल की आध्यात्मिक पर्यवेक्षिका शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलताजी, साध्वीश्री राजुल प्रभाजी, साध्वीश्री स्वस्तिक प्रभाजी एवं साध्वीश्री चारितार्थप्रभाजी का विशेष प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ एवं बेल्जियम से समागत श्री सुरेन्द्रजी पटावरी एवं मोटिवेटर राहुल कपूर का विशेष प्रशिक्षण रहा। राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, श्रीमती मधु दुगड़, उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, राष्ट्रीय सहमंत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा एवं रंजू लुणिया, अधिवेशन संयोजिका श्रीमती वीणा बैद, सह संयोजिका श्रीमती मधु कटारिया, रा.का.स. श्रीमती शशिकला नाहर, श्रीमती सरला श्रीमाल, श्रीमती सुधा नौलखा, श्रीमती निधी सेखानी, श्रीमती रमण पटावरी, श्रीमती सोनम बागरेचा, श्रीमती सुमन लुणिया, श्रीमती शशि बोहरा, श्रीमती उषा बोहरा, श्रीमती सरिता बरलोटा, श्रीमती मंजु नौलखा आदि बहनों की उपस्थिति में देश के 80 क्षेत्रों की 600 कन्याओं ने सहभागिता दर्ज करायी।

अधिवेशन का भव्य आगाज संबोध रैली के साथ हुआ। कन्याओं की विशाल रैली श्वेत एवं लाल परिधान पहनें समग्र परिसर को नारों से गुंजायमान कर रही थी। रैली परम श्रद्धेय गुरुदेव की पावन सन्निधि में सभा में

परिवर्तित हुई। गुरुदेव ने फरमाया कि कन्याएं जीवन को सफल बनाने के लिए अच्छी योजनाओं का निर्माण करें। भौतिकता के आस-पास रहते हुए भी निर्लेप बनकर आध्यात्मिकता का विकास करें। पूज्य प्रवर ने कन्याओं को शनिवार की सामायिक एवं तेरापंथ प्रबोध कंठस्थ करने की विशेष प्रेरणा प्रदान की। पूज्य प्रवर ने महत्ति कृपा कर मौसम की प्रतिकूलता की वजह से 24 घंटे से ट्रेन में फंसी राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र की 70 कन्याओं के लिए विशेष मंगलपाठ सुनाया एवं उनकी सुरक्षा की मंगलकामना की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कन्याओं को जीवन विकास का संबोध प्रदान कराने की कामना व्यक्त की। महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया, श्रीमती मधु देरासरिया एवं श्रीमती तरूणा बोहरा ने कन्या मंडल का प्रगति प्रतिवेदन श्री चरणों में समर्पित किया। कन्या मंडल ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् महिला मंडल के राष्ट्रीय पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं अ.भा.ते.यु.प. के अध्यक्ष श्री विमलजी कटारिया, कोषाध्यक्ष श्री नवीनजी बैंगानी तथा श्री पवनजी मांडोत द्वारा जैन ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय टीम से लगभग 25 बहनों एवं बैंगलुरु के सातों महिला मंडल के अध्यक्ष – मंत्रियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

प्रथम सत्र - उद्घाटन सत्र : तेरापंथ की जन्म कहानी

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर से ऊर्जा पाकर कन्याएं संघ महानिदेशिका परम श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी की सन्निधि में उपस्थित हुई। श्रीमती कुमुद कच्छारा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि कन्याएं पूज्य प्रवर से ऐसा संबोध पाये कि वे अपने जीवन में उत्तरोत्तर विकास के पथ पर बढ़ सके। श्रीमती मधु देरासरिया ने आत्म चेतना के जागरण की प्रेरणा देते हुए कन्याओं को देव गुरु धर्म के प्रति श्रद्धा को पुष्ट करने को कहा एवं कन्या मंडल का प्रगति प्रतिवेदन प्रमुखाश्रीजी को भेंट किया। मैसूर कन्या मंडल ने सुमधुर स्वरों से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। **साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि कन्याओं को धर्मसंघ का इतिहास, संघ की नीतियों की जानकारी लेनी चाहिए। कन्याओं के बाह्य एवं आन्तरिक परिवेश में धर्मसंघ की संस्कृति व संस्कार झलके इसके लिए प्रयत्नशील रहे। कन्याओं को Ask का फोर्मूला अपनाना चाहिए – A - Attitude न हो, S-Skill बढ़े, K-Knowledge का विकास हो।** बैंगलुरु के सातों महिला मंडल का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रीमती शांती संकलेचा ने सभी का स्वागत किया। अधिवेशन गीतिका संबोध पर चैन्ने कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सेलम कन्या मंडल से सुश्री नेहा जैन व आभा जैन ने किया।

द्वितीय सत्र - श्रावक संबोध Qualifying Test

राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्या श्रीमती सरिता बरलोटा, श्रीमती सुमन लुणिया एवं श्रीमती मंजु नौलखा के निरीक्षण में श्रावक संबोध लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें सभी कन्याओं ने उत्साह से भाग लिया।

तृतीय सत्र - व्यवहार में झलके जैनत्व के संस्कार

कार्यक्रम का शुभारंभ गुवाहाटी कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। बेल्जियम से समागत श्री सुरेन्द्रजी पटावरी ने कन्याओं को प्रशिक्षण देते हुए कहा कि हम सौभाग्यशाली है ऐसा धर्मसंघ पाकर। हमारे संस्कार को मजबूत एवं कायम रखना चाहिए। विचारों में परिवर्तन अपेक्षित है। लेकिन वो परिवर्तन हमारी नींव से जुड़ा हुआ होना चाहिए। उन्होंने कन्याओं को परिवार, समाज एवं संघ के प्रति विश्वास की भावना को पुष्ट रखने की प्रेरणा दी एवं इस संदर्भ में स्वयं के जीवन के अनुभव बताये। श्रीमती तरूणा बोहरा ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से इस विषय में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कन्याओं की जिज्ञासाओं को श्री सुरेन्द्रजी तक पहुंचाया। इस सत्र का कुशल संचालन दक्षिण हावड़ा कन्या मंडल से सुश्री तारा ने किया।

चतुर्थ सत्र - शताब्दी वर्ष पर महात्मा महाप्रज्ञ को संगीतमय अभ्यर्थना (भक्ति संध्या)

मुंबई कन्या मंडल के सुमधुर समवेत स्वरों से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कन्याओं का गौरव देश के विभिन्न क्षेत्रों से समागत सुमधुर गायिका कन्याएं प्रभा वेदमुथा (कोयम्बतूर),अंतिमा माण्डोत (उधना), अर्चना संचेती (गुलाबबाग), रचना बैद (सेलम), अभिलाषा बांठिया (दिल्ली), अल्का पालगोता (हुबली), दिव्या बोल्या (मुम्बई), श्रेया चपलोत (मुंबई) आदि ने अपने श्रद्धा स्वरों के साथ आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के प्रति अभ्यर्थना प्रस्तुत की। **इस सत्र का कुशल संचालन सुप्रसिद्ध संगायिका सोनल पीपाड़ा ने अपने सुमधुर स्वरों के साथ करते हुए समग्र वातावरण को भक्तिमय बना दिया।**

द्वितीय दिवस : प्रथम सत्र - निखारें श्रावकाचार

इस सत्र का शुभारंभ गदग कन्या मंडल के मंगल स्वरों के साथ हुआ। कन्याओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए साध्वीश्री राजुलप्रभाजी ने फरमाया कि कन्याओं को भारतीय संस्कृति को अपना कर शुद्ध सोना बनना है। सम्यक्त्व से श्रावकाचार को निखारने के लिए पाश्चात्य संस्कृति से दूरी बनाना जरूरी है। साध्वीश्रीजी ने श्रावक के बारहव्रतों को समझाते हुए नवीनता के साथ स्वीकार करने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री चारितार्थ प्रभाजी ने कन्याओं को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि कन्याएं दूसरों का अनुकरण न करे और स्वयं के जीवन की कोरियोग्राफर स्वयं बने। हमारी पहचान हमारे संस्कार है जो हमें पूज्य गुरुदेव एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी से मिलते है और हमें इन संस्कारों को अपने व्यवहार में अपनाना चाहिए। साध्वीश्रीजी ने दैनिक जीवन में अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह को अपनाने की कन्याओं को प्रेरणा दी। महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने 'निखारें श्रावकाचार' पर प्रस्तुति देते हुए कन्याओं को कहा कि वे कहीं भी रहे चाहे घर, ऑफिस, कॉलेज उनकी दैनिक चर्या में जैनत्व झलकना चाहिए। कन्याओं को अपने देव, गुरु और धर्म पर अटूट श्रद्धा रखनी चाहिए। सत्र का कुशल संचालन रायपुर कन्या मंडल से प्रिया चोरड़िया एवं वन्या लुंकड़ ने किया। अधिवेशन संयोजिका श्रीमती वीणा बैद ने अधिवेशन की संयोजना में लगे सभी के श्रम का उल्लेख करते हुए उन सभी का आभार ज्ञापित किया।

द्वितीय सत्र - Winner don't do different things, they do things differently

श्री डूंगरगढ़ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ इस सत्र का शुभारंभ हुआ। दायित्व बोध के साथ किये गये कर्तृत्व का मूल्यांकन प्रत्येक शाखा मंडल के लिए गौरव की बात होती है। इस सत्र में वर्ष भर में किये गये कार्यों के आकलन के आधार पर कन्या मंडलों को पुरस्कृत किया गया। महानगर श्रेणी में प्रथम – मुम्बई व चैन्नई, द्वितीय – सूरत, तृतीय – अहमदाबाद, नगर श्रेणी में प्रथम – गुवाहाटी व बालोतरा, द्वितीय – विजयनगर (बैंगलुरु), तृतीय – श्री डूंगरगढ़, प्रोत्साहन पुरस्कार – रायपुर, जयपुर शहर, जयपुर सी–स्कीम, हैदराबाद। शहर श्रेणी में प्रथम – राजनगर, द्वितीय – पचपदरा, तृतीय – उधना, प्रोत्साहन – कोयम्बतूर, हुबली, लूणकरणसर, पूर्वांचल (कोलकत्ता)। कस्बा श्रेणी में प्रथम – गुलाबबाग व राजराजेश्वरी नगर (बैंगलुरु), द्वितीय – नोखा व दक्षिण हावड़ा, तृतीय – बीकानेर व विजयनगरम् (आंध्रप्रदेश) एवं प्रोत्साहन पुरस्कार – मैसूर को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अहिंसा यात्रा शार्ट फिल्म, स्लोगन प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता, टेलेंट हंट, यूनिकशाला, मिशन स्वच्छता, तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता आदि के लिए देशभर के कन्या मंडलों में से चुने हुए कन्यामंडलों को पुरस्कृत किया गया। इस सत्र का कुशल संचालन सहमंत्री श्रीमती रंजु लुणिया एवं रा.का.स. श्रीमती जयश्री जोगड़ ने किया।

तृतीय सत्र - तेरापंथ प्रबोध रोचक क्विज

इस सत्र का शुभारंभ बालोतरा कन्या मंडल के सुमधुर स्वरों के साथ हुआ। Qualifying Test में चुने हुए प्रतियोगियों के ग्रुप्स बनाकर बडे अनूठे एवं रोचक अंदाज में तेरापंथ प्रबोध व सामान्य ज्ञान आधारित प्रतियोगिता करवाई गई। मास्टर के रूप में रा.का.स. श्रीमती निधि सेखानी ने अहम भूमिका निभाई और उनका साथ दिया रा.का.स. श्रीमती सोनम बागरेचा व सुश्री याशिका खटेड़ ने। इस सत्र का कुशल संचालन किया आमेट कन्या मंडल ने।

चतुर्थ सत्र - संघ के प्रति हमारा दायित्व

कार्यक्रम का शुभारम्भ सूरत, उधना, लिम्बायत, पर्वत पाटिया कन्या मंडल की स्वरांजलि द्वारा हुआ। साध्वीश्री स्वस्तिक प्रभाजी ने प्रेरणा देते हुए फरमाया कि कन्याएं गुरू, चारित्रात्माओं, संघ, संस्था व समाज के प्रति अपने दायित्व को समझें एवं पूर्ण समर्पण भाव रखे। अहंकार, ममकार को छोड़ने का प्रयास करें। कन्याएं शनिवार की सामायिक, संबोधि पुस्तक का स्वाध्याय एवं कंठस्थ ज्ञान कर धर्मसंघ के विकास में योगभूत बने। संघ के प्रति वफादार रहे, टालोकर को प्रश्रय न दे। स्थानीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु कटारिया ने कन्याओं को विषयानुरूप प्रशिक्षण दिया। इस सत्र का संचालन पचपदरा कन्या मंडल से नेहा चौपड़ा ने किया।

पंचम सत्र - Happy and Harmonious Family Seminar

इस सत्र का शुभारम्भ फरीदाबाद कन्या मंडल के मंगल स्वरों से हुआ। श्रीमती मधु दुगड़ एवं श्रीमती रमण पटावरी ने अर्थ सहित अर्हत् वंदना का संगान करवाया। आज की बेटियां कल की बहुएं है और परिवार का आधार स्तंभ। इनका जीवन उज्जवल हो, सुखी व समृद्ध परिवार की नींव बनें। इसी उद्देश्य से आयोजित सेमिनार में अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मोटिवेटर श्री राहुल कपूर जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं डॉ. अब्दुल कलाम की कृति Happy and Harmonious Family पर आयोजित सेमिनार में कहा कि Family यानि **Father and Mother I Love You** यही परिवार है। परिवार सुखी और समृद्ध बने इसके लिए जरूरी है स्व से पर की तरफ जायें। क्रोध को नियंत्रित कर अनेकांतमय दृष्टिकोण को अपनाकर धैर्य, विनय, विवेक के साथ कार्य करें तो निश्चित ही विश्वास की जड़ें मजबूत होगी और यदि विश्वास मजबूत है तो कोई भी समस्या, कोई भी प्रतिकूल परिस्थिति आपके शांत सहवास पर हावी नहीं हो सकती है। रिश्तों में मधुरता स्वतः आ जायेगी। जिज्ञासु वृत्ति से अनुभवों द्वारा अपना जीवन बदला जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ के ध्यान व योग को अपनाये तथा स्वाध्याय को मित्र बना लें, तो ज्ञान को बढ़ाते हुए स्वनियंत्रण एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से सुखी व समृद्ध परिवार की परिकल्पना को मूर्तरूप दे सकते हैं। श्री जैन ने कन्याओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान दिया।

महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने अधिवेशन की समीक्षा करते हुए इसे एक सफलतम निष्पत्तिजनक आयोजन बताया। इस सत्र में साध्वीवृंद का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ। JTN Live Telecast से इस सेमिनार की गूंज देश के प्रत्येक कोने में पहुँची। कार्यक्रम का सुंदर संचालन रा.का.स. श्रीमती सोनम बागरेचा ने किया।

तृतीय दिवस - तेरापंथ की मौलिकता

परम आराध्य आचार्य प्रवर के मंगल उद्बोधन से पूर्व असाधारण साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कन्याओं को दिशा बोध करते हुए फरमाया कि जिन्दगी एक Note Book की तरह है इस पर जो चाहे लिखा जा सकता है इस पर क्या लिखना है, यह स्वयं पर निर्भर है। कन्याओं की शिक्षा का स्तर बढ़ा है। शिक्षा जीवन का पथ हो सकता है, किन्तु गंतव्य नहीं हो सकता। इसलिए कन्याओं को सोचना चाहिए कि हमारा गंतव्य क्या है और उस दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास भी करना चाहिए। ऐसा लगता है कि इन वर्षों में तेरापंथी महिलाओं और कन्याओं में ज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ा है। परम पूज्य आचार्य प्रवर की दृष्टि से प्रेरणा भी रहती है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रम और जैन विश्व भारती द्वारा संचालित पाठ्यक्रम से काफी कन्याएं जुड़ी हुई है। कन्याएं स्मार्ट बने। स्मार्टनेस केवल वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन आदि में ही न रहे, अपितु जीवन की प्रत्येक क्रिया में स्मार्टनेस होनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा के Smart में पांच अक्षर है। S अर्थात Spirituality, M अर्थात Morality, A अर्थात Accountability, R अर्थात Responsibility तथा T अर्थात Tolerance कन्याओं के जीवन में होने चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने पूज्य प्रवरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं अधिवेशन की संयोजना

में संलग्न सभी का आभार व्यक्त किया। वृहद् बैंगलुरु कन्या मंडल ने अपनी सुंदर प्रस्तुति के द्वारा पूज्य प्रवर के प्रति श्रद्धा स्वर समर्पित किये। राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु देरासरिया ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कन्या मंडल के वर्ष भर की गति-प्रगति की रिपोर्ट आंकड़ों में रखते हुए बताया कि कन्याएं तप, जप तत्वज्ञान, त्याग, जैन विद्या आदि कार्यों से अध्यात्म की अलख जगा रही है।

अधिवेशन की सफलता में श्रीमती वीणा बैद, श्रीमती सुधा नौलखा, श्रीमती सरला श्रीमाल, श्रीमती शशिकला नाहर, श्रीमती मधु कटारिया, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्रीमान मूलचन्दजी नाहर, महामंत्री दीपचन्दजी नाहर, अ.भा.ते.यु.प. के राष्टीय अध्यक्ष श्री विमलजी कटारिया एवं आवास तथा भोजन व्यवस्था के सभी पदाधिकारीगण तथा बैंगलुरू महिला मंडल से रूचिका जैन, प्रतिक्षा जैन, बिंदु जैन, पिंकी टेबा एवं बैंगलुरू कन्या मंडल से दिव्या मांडोत, काजल बाबेल, किर्ती मारू, प्रेक्षा गादिया, प्रज्ञा जैन, स्नेहा गन्ना, शेफाली जैन का विशेष सहयोग रहा। महिला मंडल के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, कार्यालय प्रभारी श्रीमती सुमन नाहटा एवं बैंगलुरु के सातों ही महिला मंडल की बहनें जिनका अधिवेशन की विभिन्न व्यवस्थाओं में महनीय सहयोग प्राप्त हुआ उन सबका अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

श्रीमती मधु विमलजी कटारिया परिवार द्वारा अधिवेशन में तीनों दिन आतिथ्य प्रदान करने हेतु एवं आवास व्यवस्था में सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद

NRI Summit में अभातेममं की योजनाओं की प्रस्तुति

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में बैंगलुरु में महासभा द्वारा प्रथम NRI Summit का आयोजन किया गया। लगभग 13 देश से 111 संभागियों ने इस Summit में सहभागिता दर्ज की। Summit के संयोजक बेल्जियम से श्री सुरेन्द्र पटावरी ने इस संयोजना में विशेष भूमिका निभाई। मुनिश्री विश्रुत कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित विशेष सत्र में महासभा महामंत्री श्री विनोद बैद ने सभी प्रतिभागियों एवं सभा संस्था के पदाधिकारियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने संस्था की चारों योजनाओं की जानकारी दी साथ ही विदेश की धरा पर भी मंडल के सदस्यों द्वारा मौका मिलने पर किये जाने वाले कार्यों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रथम बार आयोजित इस Summit में ABTYP से विमलजी कटारिया, TPF से श्री संजय जी धारीवाल एवं अन्य संघीय सभा संस्था के पदाधिकारियों ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल का शिलान्यास

सचिन - अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में 'कन्या सुरक्षा योजना' के अन्तर्गत सचिन महिला मंडल द्वारा कन्या सुरक्षा सर्किल का शिलान्यास अभातेममं अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के हाथों करवाया गया। मंडल अध्यक्ष श्रीमती शशि कोठारी ने सभी का स्वागत किया। जैन संस्कारक श्री प्रकाशजी डाकलिया, श्री विजयकांत जी खटेड़ एवं श्री धर्मचंदजी श्यामसुखा ने जैन विधि से शिलान्यास करवाया। कार्यक्रम में श्रीमती मधु देरासरिया श्रीमती मंजु नौलखा एवं सूरत महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयंती सिंघी की गरिमामयी उपस्थिति रही। सर्किल के स्थान प्राप्ति हेतु श्री राजमलजी काल्या, श्री चेतनजी काल्या एवं पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सीमा मेहता का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम में सचिन क्षेत्र के सभा संस्था के पदाधिकारियों, महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

तत्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन के द्वितीय दीक्षांत समारोह ''श्रुतोत्सव'' का भव्य आयोजन

कर्मों से छुटकारा मिले बिना मोक्ष नहीं मिलता। कर्मों की श्रृंखला को तोड़ने के लिए भगवान ने निर्जरा के 12 भेद बताए है उनमें एक है – स्वाध्याय। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल इस दिशा में सतत जागरूक है। संस्था के चार प्रमुख योजनाओं में एक है ''आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना''। इस योजना का दीक्षांत समारोह परमाराध्य आचार्य महाश्रमणजी के सान्निध्य में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की पावन प्रेरणा से ''श्रुतोत्सव'' के रूप में कुम्बलगुडु, बैंगलुरू में आयोजित किया गया।

श्रुतोत्सव का शुभारम्भ पूज्य प्रवर के मंगल आशीर्वचन से हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया, योजना निदेशिका श्रीमती पुष्पा बैंगानी एवं राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती मंजु भूतोडिया ने पूज्य प्रवर को दीक्षांत समारोह की समय सारिणी व कोर्स की सम्पूर्ण जानकारी के लिए फोल्डर भेंट किया। आचार्य प्रवर ने असीम कृपा बरसाते हुए सम्पूर्ण कोर्स का निरीक्षण करके फरमाया इसमें ''जैन तत्व प्रवेश भाग–2'' को जोड़ा जा सकता है। यह ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सहमंत्री तत्व प्रचेता श्रीमती रंजू लुणिया, श्रीमती जयश्री जोगड़, श्रीमती सरला सुराणा व श्रीमती किरण सुराणा ने 'अनुभव की संपदा' की शब्द चित्र द्वारा प्रस्तुति दी।

मध्यान्हः 2 बजे महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी की सन्निधि में व्यवस्था पक्ष व प्रचेता बहनों का परिचय सत्र चला। महाश्रमणी जी ने मंगल उद्बोधन में फरमाया – अ.भा.ते.म.मं. के अनेक उपक्रम चल रहे हैं, मुझे लगता है ''आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना'' सर्वाधिक महत्वपूर्ण योजना है क्योंकि इसका परिणाम आ रहा है। ज्ञान बढ़ा है यह बड़ी बात नहीं है। जीवन शैली में रूपान्तरण हुआ है यह बड़ी बात है। व्यवस्था पक्ष मजबूत है, पूरी टीम पूर्ण समर्पण से लगी हुई है। साध्वी जिनप्रभा का भी पूरा श्रम लगता है। महिला मंडल सतत जागरूक है और यह क्रम आगे से आगे बढ़ता रहे यही मंगल कामना है।''

दोपहर 4 बजे सम्मान–पुरस्कार सत्र में इस योजना में निरन्तर कार्यरत प्रशिक्षक, व्यवस्थापिका एवं व्यवस्था पक्ष से जुड़ी बहनों को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, पूर्वाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी, महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया द्वारा सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2018 में उच्च स्थान प्राप्त किए हुए परीक्षार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया।

श्रुतोत्सव की पूर्व संध्या - श्रुत समागम सत्र

साध्वीश्री मधुस्मिता के सान्निध्य में रखा गया। इसमें तत्वज्ञान प्रचेताओं की थोकड़ों के आधार पर लिखित प्रतियोगिता रखी गई। तत्पश्चात् समागत व प्रचेताओं का स्वागत गांधीनगर बैंगलोर की मंत्री व केन्द्र व्यवस्थापिका श्रीमती लता गादिया ने किया। श्रीमती कनक बरमेचा ने जैन स्कोलर कोर्स की सम्पूर्ण जानकारी प्रचेताओं के सम्मुख प्रस्तुत की। साध्वीश्री मधुस्मिताजी ने फरमाया – साध्वीश्री जिनप्रभाजी ने तत्वज्ञान कोर्स चलाकर बहुत बड़ा काम किया है। कितनी–कितनी बहनें तत्वज्ञानी और तेरापंथ प्रचेता बन गई है। बहनों ने जो ज्ञान ग्रहण किया है उसे बांटे, बांटने से ज्ञान दुगुना बढ़ता है। पूज्य प्रवर तीर्थंकर तुल्य है, इनकी सन्निधि में जो कार्य होता है उससे ऊर्जा मिलती है। साध्वीश्रीजी ने बहनों को 'संबोधि' पढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का सफल संचालन पूर्व महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने किया।

बढ़ते कदम

8 अगस्त को 'संबोधि सत्र'

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में प्रवचन पंडाल में हुए इस सत्र में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी द्वारा रचित ''आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना'' पर आधारित गीत का लोकार्पण तथा नए पाठ्यक्रम कोर्स ''तत्वविज्ञ'' का शुभारम्भ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने दीक्षांत समारोह में समागत प्रचेताओं की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि ''प्रचेता की डिग्री लेने वाले लगभग 190 संभागी आपके सम्मुख उपस्थित है। पूज्यप्रवर आज आप के सम्मुख नए पाठ्यक्रम ''तत्वविज्ञ'' का शुभारम्भ होने जा रहा है। लगभग 502 तत्वज्ञान व तेरापंथ प्रचेता अब तक बन चुके हैं वो आगे इस शिक्षा योजना में जुड़ सकते हैं। पूज्य प्रवर आपके आशीर्वाद, शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी के श्रम, व्यवस्थापक्ष पूर्वाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी, योजना की संयोजिका श्रीमती मंजु भुतोड़िया, उप संयोजिका कुसुम बैंगानी व समस्त व्यवस्थापक्ष से जुड़ी बहनों के अथक श्रम के कारण यह योजना निरन्तर गतिमान है सभी को बहुत-2 बधाई देती हूँ।'' पूर्वाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने कहा पूज्यप्रवर यह एक सुखद संयोग ही है कि प्रथम दीक्षांत समारोह आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर पुण्यधरा लाडनूं व द्वितीय दीक्षांत समारोह आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी जिसे आपने 'ज्ञान चेतना वर्ष' घोषित किया है इस अवसर पर होने जा रहा है। पूज्य प्रवर यह आपके ही आशीर्वाद और प्रेरणा का सुफल है।

पूज्य प्रवर ने उद्बोधन देते हुए फरमाया बहनों ने जो ज्ञान ग्रहण किया है उसे व्यवहार में लाए। भगवती पन्नवणा आदि का अध्ययन करे। नए कोर्स **'तत्व विज्ञ'** से जुड़े तथा **'जैन तत्व प्रवेश खण्ड-2'** को देखने की पुनः प्रेरणा दी। मंगल उद्बोधन के पश्चात् श्रीमती कुमुद कच्छारा, श्रीमती नीलम सेठिया, श्रीमती कनक बरमेचा एवं श्रीमती पुष्पा बैद व तत्वज्ञ श्राविका रतनी देवी गोठी की पौत्रवधु श्रीमती नीलम गोठी ने समागत बहनों को प्रमाण पत्र व मैडल से सम्मानित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया व योजना की निदेशिका श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने किया।

मध्यान्ह 2 बजे महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के सान्निध्य में **'ज्ञान ज्योति सत्र'** आयोजित किया गया। सर्वप्रथम 'आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना' पर आधारित गीत का ओडियो हेमाजी चौरड़िया द्वारा सुनाया गया। राष्ट्रीय सहमंत्री श्रीमती रंजू लूणिया, सुश्री प्रज्ञा जैन व प्रकाशजी जैन ने अपने अनुभव से बताया कि शिक्षा से किस प्रकार हमारे जीवन का रूपान्तरण हुआ है। त्याग की भावना, संकल्प शक्ति, सत्य की आराधना बढ़ी है। स्वयं का आकलन होने लगा है और लगता है हम उर्ध्वारोहण की तरफ बढ़ रहे हैं।

श्रद्धेया महाश्रमणी जी ने फरमाया कि ''आचार्यश्री महिला मंडल की इस योजना को बहुत महत्व देते है और समय-समय पर सबको इस योजना से जुड़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। बहनों को साधुवाद देना चाहिए क्योंकि ये संघ की सेवा कर रही है। तत्वज्ञान को अलूणी शीला कहते है। थोकड़ों को सीखना बहुत बड़ी बात है। बहनें भीतर उतरी है, ज्ञान के क्षेत्र में लोभ बढ़ रहा है। बहनों-भाइयों के अनुभव से लगता है जीवन शैली में परिवर्तन हुआ है। साध्वी जिनप्रभाजी श्रम कर रही है, बहनों की भावना के अनुरूप पाठ्यक्रम बना है। ज्यादा से ज्यादा बहनें इसमें जुड़े। हमें रोहिणी और रक्षिता बनना है। व्यवस्था पक्ष मजबूत है। साध्वियों के लिए भी व्यवस्था करती है। कभी थकती नहीं रूकती नहीं। उत्साह से कार्य कर रही है सारा व्यवस्थापक्ष साधुवाद का पात्र है। तत्वज्ञान जैन दर्शन जीवन में उतरे यही मंगल कामना है।''

मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुत विभाजी ने फरमाया - ''साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कुछ समय पहले एक छोटा सा ग्रन्थ याद करवाया था ''गौतम पुल्लकन'' उसमें प्रश्न आता है अच्छा साधु कौन? उत्तर मिला जो तत्व रसिक हो।

अब कई भाई बहन तत्व रसिक बन गए है। 'नाण पयासयरं' ज्ञान प्रकाश कराने वाला होता है। असीम आकाश में उड़ने के लिए आगमों की गहराई में जाए। भगवती सूत्र पढ़े, हिन्दी अनुवाद टिप्पण व भाग पढ़ें। ज्ञान को जीवन का श्रृंगार बनाएं। इसमें स्वयं भी आलोकित हो और दूसरों को भी आलोकित करें।''

साध्वीवर्या साध्वी संबुद्ध यशाजी ने फरमाया ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए तीन बातें आवश्यक है – श्रद्धा, उत्साह और पुरुषार्थ। इन तीनों से समाहित हो बहनें स्वयं भी पढ़े और दूसरों को भी पढ़ाएं जिससे ज्ञान आगे बढ़ता रहे। शासन श्री साध्वी जिनप्रभाजी ने फरमाया गुरुकृपा, साध्वीप्रमुखाश्रीजी के आशीर्वाद व बहनों की लगन के कारण 'भगवती भाष्य' तीन वर्ष के कोर्स में सामने आ रहा है। आपका आशीर्वाद रहेगा तो बहनें कहाँ से कहाँ पहुँच जाएगी। कार्यक्रम का सफल संचालन रा.का.स. श्रीमती मंजु भूतोड़िया ने किया।

सायं 7 बजे गुणस्थानों के आरोहण पर प्रचेता बहनों के लिए प्रश्न मंच रखा गया। पूर्वाध्यक्ष पुष्पाजी बैंगानी व उपाध्यक्ष पुष्पाजी बैद ने जज का दायित्व संभाला। इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती हेमा चौरड़िया ने किया।

9 अगस्त को 'करें श्रुत सागर में अवगाहन' सत्र में उद्बोधन दिया शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी ने। आपने फरमाया श्रद्धा और तर्क से हम किस प्रकार संसार समुद्र से तर सकते हैं। विज्ञ पाठ्यक्रम को कैसे पढ़ना है? थोकड़ों को पक्का कैसे रखना है? संयम को पुष्ट रखने के लिए परावर्तन आवश्यक है। हमारा ज्ञान ऐसा हो कि हमारे व्यवहार में झलके। साध्वीश्री जी ने अनेक बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया सभी प्रचेता बहनों ने संकल्प किया कि प्रतिदिन एक थोकड़े का पुनरावर्तन करेगी।

दिनांक 9 व 10 अगस्त तत्वज्ञान तेरापंथ दर्शन के छठें व पांचवे वर्ष की विशेष परीक्षा का आयोजन किया गया।

दिनांक 9 अगस्त मध्यान्ह 2 बजे परीक्षार्थी बहनों को पूज्यप्रवर से मंगल उद्बोधन प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् महाश्रमणीवरा से परीक्षा के लिए मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ। लगभग 2.30 बजे श्रीमती कुमुद कच्छारा ने परीक्षार्थी बहनों को संबोधित करते हुए परीक्षा के लिए शुभकामना संप्रेषित की। सायं 7.30 बजे तक मौखिक परीक्षा का यह क्रम चला। अर्हत् वंदना के पश्चात् शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी ने ज्ञान पिपासु बहनों को ज्ञानामृत दिया और उनकी जिज्ञासाओं को समाहित किया।

10 अगस्त को परीक्षार्थियों की 1 घंटे की लिखित विशेष परीक्षा हुई। इन परीक्षाओं में कुल 64 परीक्षार्थियों ने भाग लिया जिसमें से 54 तत्वज्ञान 10 तेरापंथ के परीक्षार्थी थे।

इस योजना के संचालन में उप संयोजिका श्रीमती कुसुम बैंगानी का विशेष सहयोग रहा। प्रशिक्षिका श्रीमती सुशीला सुराणा, श्रीमती उर्मिला सुराणा, श्रीमती दीपाली सेठिया, श्री नवरतनी देवी लूणिया, श्रीमती मंजू बरड़िया, श्रीमती सरला सुराणा, श्रीमती मनीषा सेठिया, श्रीमती पुष्पा बैद (कोलकत्ता) का पूर्ण सहयोग रहा। व्यवस्था पक्ष में श्रीमती विनोद कोठारी, श्रीमती रेशम छाजेड़, श्रीमती सुनीता छाजेड़ का विशेष सहयोग रहा। गांधीनगर बैंगलोर महिला मंडल की मंत्री व व्यवस्थापक श्रीमती लता गादिया, रा.का.स. श्रीमती लता जैन, श्रीमती पुष्पा गन्ना, श्रीमती बरखा पुगलिया एवं बैंगलोर की समस्त महिला मंडल की कार्यकर्ता बहनों का आभार। कार्यक्रमों के संचालन व वीडियो तथा ओडियो निर्माण हेतु हेमा चौरड़िया–दिल्ली, रा.का.स. श्रीमती नीतू ओस्तवाल, श्रीमती विमला कोचर, श्रीमती शान्ता गुलगुलिया का धन्यवाद।

इस योजना को आर्थिक संपोषण प्रदान करने वाली तत्वज्ञ श्राविका रतनी देवी, श्रीमान सुमतिचन्दजी, श्रीमती सुमन श्रीजी, श्री योगेन्द्रजी, श्रीमती नीलम गोठी परिवार सरदारशहर–मुम्बई के प्रति अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

Happy and Harmonious Family सेमिनार

मुंबई – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के निर्देशन व सहयोग से कांदिवली तेरापंथ भवन के विशाल प्रांगण में आगम मनीषी प्रोफेसर मुनि श्री महेन्द्र कुमारजी के पावन सानिध्य में एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई ने अपने नए कार्यकाल का आगाज़ तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्मशताब्दी वर्ष के मंगल शुभारंभ के उपलक्ष में Happy and Harmonious Family सेमिनार के भव्य आयोजन के साथ किया। नव निर्वाचित अध्यक्ष भाग्यश्री कच्छारा व मंत्री स्वीटी लोढ़ा ने अपनी टीम के साथ राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत किया। भाग्यश्री कच्छारा ने सेमिनार की जानकारी देते हुए कहा कि महाप्रज्ञ जी की अनुपम Happy and Harmonious Family पुस्तक में अंकित हर वाक्य में सुखी परिवार व समृद्ध राष्ट्र का चित्रण किया गया है। इसे जन जन तक पहुँचाने के लिए अ. भा. ते. म. मं. ने पूरे देशभर में 100 से अधिक सेमिनार आयोजित करने की घोषणा की है उसी क्रम में यह मुंबई में आयोजित हुआ है ! सेमिनार का शुभारंभ संघ गायिका मीनाक्षीजी भूतोड़िया ने अपने सुमधुर स्वर में महाप्रज्ञ अष्टकम द्वारा किया । मलाड क्षेत्र की बहनो ने स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज गीत की विशेष प्रस्तुति दी। डॉ. मुनिश्री अभिजित कुमारजी ने कार्यक्रम के संचालन के साथ साथ उपस्थित संभागियों को सुखी एवं समृद्ध परिवार के निर्माण हेतु पाथेय भी प्रदान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुदजी कच्छारा ने अपने वक्तव्य द्वारा Happy and Harmonious Family सेमिनार के महत्व को समझाते हुए कहा कि हम बदलते युग के साथ इतना आगे निकल चुके है कि परिवार की स्थिति को नजरअंदाज करने लगे है । शिक्षित तो हम हो गए किन्तु संस्कारों को भूलते जा रहे है । उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा – यह सेमिनार हमें फिर से हमारी जमीन से जोड़ने का प्रयास करेगा । संस्कारों का बीजारोपण करेगा । परिवारों में फिर से सौहार्दपूर्ण वातावरण मिलेगा । तत्पश्चात् राष्ट्रीय परामर्शक प्रेमलता जी सिसोदिया ने प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन किया । मुंबई उपाध्यक्ष रचनाजी हिरण ने सेमिनार के मुख्य वक्ता इंटरनेशनल मोटिवेटर राहुल कपूर का परिचय दिया। राहुल कपूर ने अधिशास्ता कालजयी महर्षि परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञ जी की पुस्तक Happy and Harmonious Family के हर एक पन्नों को छूते हुए बहनों को प्रायोगिक प्रशिक्षण देकर उनको मोटिवेट किया। जिससे प्रेरित होकर बहनों ने परिवार में सौहार्द बनाए रखने हेतु संकल्प लिए । सेमिनार में सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीयों की उपस्थिति के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुदजी कच्छारा व ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, प्रेमलताजी सिसोदिया, सुमनजी बच्छावत, निर्मलाजी चण्डालिया, कांताजी तातेड़, जयश्रीजी बडाला एवं मुंबई महिला मण्डल की कार्यकारिणी सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। सेमिनार में मुंबई के सभी क्षेत्रों से लगभग 800 भाई–बहनों की उपस्थिति रही। स्थानकवासी सम्प्रदाय से भी महिलाओं ने सेमिनार में भाग लिया। राष्ट्रीय कन्या मण्डल सहप्रभारी एवं मुंबई उपाध्यक्ष तरुणा जी बोहरा ने सभी का आभार ज्ञापन किया ।

सेलम – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल सेलम द्वारा Happy and Harmonious family सेमिनार का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुदजी कच्छारा, महामंत्री नीलमजी सेठिया एवं रा.का. सदस्य सुनीताजी बोहरा एवं मंजुलाजी डूंगरवाल का स्वागत स्थानीय टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। मंगलाचरण श्रीमती नीतु सेठिया एवं श्रीमती निकिता बैद ने किया। महाप्रज्ञ अष्टकम का संगान कोषाध्यक्ष श्रीमती शालिनी लूकंड़ ने किया। ज्ञानशाला की बालिकाओं ने सकंल्प गीत की धुन पर सुदंर नृत्य की प्रस्तुति दी। साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के संदेश का वाचन श्रीमती मंजुला डूंगरवाल ने किया। तेममं सेलम अध्यक्ष श्रीमती सरिता दुगड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। श्रीमती सुनीता बोहरा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष की विशेषताओ से परिचित कराया। कन्या मंडल संयोजिका सुश्री खुशबू भंडारी ने मुख्य वक्ता मनोचिकित्सक सुश्री आरती राजरत्नम् का परिचय दिया। महामंत्री ने अपने क्षेत्र में पधारी हुई राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत करते हुए कहा कि गौरव महसूस हो रहा है उपासिका एवं सुश्रविका के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने व्यक्तव्य में मंडल की गतिविधियों की जानकारी देते हुए सेलम महिला मंडल को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष श्रीमान विनय कुमारजी भूतोड़िया, तेरापथं सभा अध्यक्ष श्री सोहनलालजी बाफना एवं तेयुप अध्यक्ष श्री अशोकजी चोपड़ा ने भी

अपने विचार रखें । मुख्य वक्ता सुश्री आरती राजरत्नम ने स्वस्थ रिलेशनशिप कैसे बनाया जाए उसके गुर सिखाए । श्रीमती सुनीता डूंगरवाल ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया । धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री श्रीमती निशा डूंगरवाल द्वारा किया गया।

पालघर – महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में अ.भा.ते.म.मं. के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल पालघर ने Happy & Harmonious Family सेमिनार का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में किया। पालघर महिला मंडल की बहनों ने महाप्रज्ञ अष्टकम् व स्वस्थ परिवार गीत का संगान किया एवं पालघर महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती संगीता बाफना ने अतिथियों का स्वागत किया। मुनिश्री जिनेश कुमारजी ने विषय पर पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि परिवार के सदस्यों में सहिष्णुता, सामंजस्य, वाणी संयम, सदाचार, सेवा, सहयोग, संगठन से स्नेह एवं सकारात्मक चिंतन आदि गुणों का विकास होने से Happy & Harmonious Family का निर्माण होता है। मुनिश्री परमानंदजी ने कहा कि परिवार के सदस्यों में आपसी समझ, प्रेम व समन्वय होने से घर स्वर्ग जैसा बन जाता है। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने विषय पर बोलते हुए कहा कि सहन करो–सफल बनो, रहो भीतर–जिओ बाहर ये सुखी एवं संतुलित पारिवारिक जीवन के मूल सूत्र है साथ ही उन्होंने प्रायोगिक प्रशिक्षण द्वारा परिवार में पारस्परिक संवाद से सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है यह भी बताया। रा.का.स. श्रीमती निर्मला चंडालिया ने Family शब्द की विवेचना करते हुए विषय पर विचार प्रस्तुत किये। रा.का.स. श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन किया। पालघर सभा अध्यक्ष श्री नरेशजी राठौड़ व तेयुप अध्यक्ष श्री हितेश सिंघवी ने सेमिनार की सफलता के लिए शुभकामना प्रेषित की। आभार स्थानीय मंत्री श्रीमती विद्या बाफना ने किया। सेमिनार में बोईसर, सफाला, मनोर, वसई, विरार, नालासोपारा आदि क्षेत्रों से भी बहनों की सहभागिता रही। कार्यक्रम में महिला मंडल, कन्या मंडल एवं श्रावक समाज से अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

सूरत – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल सूरत के तत्वावधान में उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमार जी के सानिध्य में तेरापंथ भवन में दक्षिण गुजरात स्तरीय Happy and Harmonious family सेमिनार का सफल आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में हुआ। राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु देरासरिया, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती भाग्यश्री जी कच्छारा, श्रीमती मंजू नौलखा, श्रीमती निधि सेखानी की सेमिनार में गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत महाप्रज्ञ अष्टकम के द्वारा हुई तथा मंडल की बहनों ने स्वस्थ समाज गीतिका का भी संगान किया। साध्वी प्रमुखा श्री जी के संदेश का वाचन सरोज जी सेठिया ने किया। मुनि श्री जी ने अपने विशेष उद्बबोधन में फरमाया एक सुखी और संतुलित परिवार ही सुखी और समृद्ध राष्ट्र की नींव है। श्रीमती कुमुद कच्छारा ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के सुखी एवं समृद्ध परिवार हेतु बताए गए सूत्र सहन करो सरल बनो तथा रहो भीतर जिओ बाहर की व्याख्या करते हुए बहनों को Happy and Harmonious family के निर्माण की कला बताई। कनक जी बरमेचा ने भी सुखी एवं संतुलित परिवार के गुर बताए। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती मधु देरासरिया ने किया।

दक्षिण गुजरात के लिंबायत, उधना, कामरेज, वापी, बारडोली, पर्वत पाटिया, नवसारी, वलसाड, बड़ौदा, सचिन इत्यादि एवं सूरत की कुल 275 बहनों ने इसमें भाग लिया। मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयंती सिंघी ने सभी का स्वागत किया। मोटीवेटर श्रीमती पूजा व्यास का प्रशिक्षण आकर्षण का केंद्र रहा। उन्होंने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर सूरत के दो मुख्य मार्गों पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के होर्डिंग भी लगाए गए और संबोधि और महाप्रज्ञ प्रबोध पर आधारित महाप्रज्ञ प्रश्नोत्तरी का विमोचन भी कुमुद जी के हाथों से किया गया। आभार ज्ञापन किया मंत्री पूर्णिमा गादिया ने। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेयुप एवं अन्य संस्था के पदाधिकारी भी उपस्थित हुए।

कांकरोली – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वीश्री जिनबालाजी के सानिध्य में मुख्य अतिथि पूर्व महामंत्री श्रीमती सुमन नाहटा एवं रा.का.स. श्रीमती नीतू पटावरी, श्रीमती नीना कावड़िया की गरिमामय उपस्थिति में कांकरोली तेरापंथ महिला मंडल द्वारा Happy Harmonious Family Seminar का आयोजन किया गया। सेमिनार का प्रारंभ कांकरोली महिला मंडल की 100 बहनों एवं कन्याओं के महाप्रज्ञ

अष्टकम के सामूहिक संगान से किया गया। कांकरोली मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मंजु दक ने अतिथि एवं आगंतुक विभिन्न समाज की स्थानकवासी, मंदिर मार्गी, दिगंबर, ब्राह्मण, माहेश्वरी एवं अन्य क्षेत्र नाथद्वारा, राजनगर, धोइंदा, गंगापुर, रेलमगरा से पधारी लगभग 400 बहनों का स्वागत अभिनंदन किया और कहा कि निश्चित ही आप सभी इस सेमिनार से कुछ जीवन जीने के नवीन उद्देश्य लेकर जायेगी। साध्वी श्री जिनबालाजी ने पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी के सपनों का स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज तभी बन सकता है जब हर घर में प्रेम रूपी देवता का वास हो हमें चिंतन करना होगा परिवार को स्वस्थ सुखी बनाने की दिशा अपनानी होगी। साध्वी श्री करुणा प्रभाजी, साध्वी श्री भव्यप्रभाजी ने भी अपने विचार से सबको लाभान्वित किया। साध्वी श्री लाभवती जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कन्या मण्डल की कन्याओं ने स्वस्थ परिवार गीत पर सुन्दर प्रस्तुत दी। सेमिनार के प्रमुख वक्ता युवारत्न, अणुव्रत सेवी, उपासक श्रेणी, प्रवक्ता, IPS अधिकारी श्रीमान राजेंद्र जी सेठिया ने परिवार को सुखी- समृद्ध एवं खुशहाल बनाने हेतु विभिन्न सूत्रों एवं बातों को जीवन में उतारने के रोचक एवं प्रायोगिक टिप्स दिए। मुख्य अतिथि अभातेमम पूर्व महामंत्री श्रीमती सुमन नाहटा ने अपने वक्तव्य में कहा - केवल घर के आगे कोई प्रतीक चिन्ह लगा देने से शांति प्राप्त नहीं होती, इसके लिए परिवार के हर सदस्य को अपनी सोच बदलनी होगी, नई पहल करनी होगी, बड़ों का छोटे के प्रति छोटों का बड़ों के प्रति समर्पण भाव जगाना होगा। सेमिनार में राजनगर से श्रीमती मंजु बडोला एवं दिल्ली से श्रीमती सुनीता डुंगरवाल की भी उपस्थित रही। श्रीमती नीतू एवं सुनीता ने भी अपने विचार रखे। डॉ. नीना कावड़िया ने साध्वी प्रमुखा जी के संदेश का वाचन किया। सेमिनार का कुशल संचालन पूर्व मंत्री श्रीमती सरोज चोरडिया एवं सहमंत्री श्रीमती मनीषा कच्छारा ने किया। इस सेमिनार में तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री भीकमजी कोठारी, मंत्री श्री विनोदजी चंडालिया एवं तेयुप अध्यक्ष श्री मुकेशजी सोनी, मंत्री श्री धनेंद्रजी मेहता अपनी टीम के साथ उपस्थित रहे। उन्होंने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती उषा कोठारी ने किया।

चैन्नई - आचार्य महाश्रमणजी के सुशिष्य तपस्वी मुनिश्री ज्ञानेन्द्र कुमारजी एवं मुनिश्री रमेशकुमारजी के सान्निध्य में अ.भा.ते.म.मं. निर्देशानुसार चैन्नई महिला मंडल द्वारा Happy and Harmonious family सेमिनार का आयोजन किया गया। चैन्नई मंडल अध्यक्ष श्रीमती शांति दुधोड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। महाप्रज्ञ अष्टकम एवं स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज गितिका का संगान चैन्नई मंडल की बहनों द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता सीमा गादिया ने बहनों को प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में श्री गौतमचंदजी सेठिया, श्री तेजप्रकाशजी चौरड़िया, श्री धर्मचंदजी लुंकड़, श्री अमरचंदजी लुंकड़, टीपीएफ अध्यक्ष श्री अनिलजी लुणावत आदि गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। लगभग 700 से अधिक भाई-बहनों ने सेमिनार में सहभागिता दर्ज की। संचालन मंत्री श्रीमती गुणवंती खटेड़ ने किया।

अ.भा.ते.म.मं. द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशती पर लक्षित 100 Happy & Harmonious सेमिनार की श्रृंखला में निम्न शाखा मंडलों द्वारा सक्रियता व जागरूकता के साथ इस सेमिनार का आयोजन किया गया।

1. अहमदाबाद
2. औरंगाबाद
3. आसींद
4. बालोतरा
5. बेल्लारी
6. बंगाई गाँव
7. चिकमंगलूर
8. चित्रदुर्ग
9. धारवाड़
10. देवगढ़
11. गदग
12. हिसार
13. हासन
14. ईरोड़
15. केजीएफ
16. कामरेज
17. कोटा
18. कालांवाली
19. काठमांडू
20. कटिहार
21. जसोल
22. लावा सरदारगढ़
23. नाथद्वारा
24. नौखा
25. पचपदरा
26. रायपुर
27. उदयपुर
28. विराटनगर
29. विशापट्टनम
30. सिलीगुडी
31. शिशोदा
32. गुवाहाटी
33. फरीदाबाद
34. बोइसर
35. कोपरखैरना (मुंबई)
36. मंडया
37. फारबिसगंज

अब तक प्राप्त सूचनाओं के आधार पर 50 सेमिनारों का आयोजन हो चुका है।

कन्या सुरक्षा योजना के अन्तर्गत बैंचों का निर्माण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा कन्या सुरक्षा योजना के अन्तर्गत सार्वजनिक स्थलों पर कन्या सुरक्षा के संदेश प्रचारित करती बैंचों के निर्माण करने हेतु शाखा मंडलों से आह्वान किया गया। इसी क्रम में सेलम मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सरिता दुगड़, मंत्री श्रीमती सरिता चौपड़ा, पालघर मंडल अध्यक्ष श्रीमती संगीता बाफना, मंत्री श्रीमती विद्या बाफना एवं कामरेज मंडल अध्यक्ष अरूणा देरासरिया व मंत्री रेखा मांडोत ने जागरूकता एवं सक्रियता का परिचय देते हुए प्रमुख स्थानों पर बैंचों का निर्माण किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा एवं महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने सेलम महिला मंडल द्वारा जैन यूथ सोसायटी हॉस्पिटल के प्रांगण में निर्मित 5 बैंचों का अनावरण किया। पालघर महिला मंडल द्वारा सरकारी हॉस्पिटल, रेल्वे स्टेशन, बस डिपो इत्यादि महत्वपूर्ण सरकारी स्थलों पर 17 बैंचों का लोकार्पण श्रीमती कुमुद कच्छारा के हाथो से करवाया गया। कामरेज महिला मंडल द्वारा भी बस स्टेण्ड, भवानी मंदिर, क्लिनिक इत्यादि स्थानों पर 7 बैंचों का अनावरण राष्ट्रीय अध्यक्ष के हाथों करवाया गया। कामरेज में कन्या मंडल संयोजिका सुश्री पिंकल देरासरिया की 9 की तपस्या का अभिनंदन राष्ट्रीय टीम ने साहित्य से किया।

कामरेज – तेयुप कामरेज द्वारा आयोजित ''एक शाम देश के नाम'' आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने तेयुप को कार्यक्रम के लिए बधाई प्रेषित की। तेयुप कामरेज अध्यक्ष श्री पिंटुजी मांडोत ने गितिका द्वारा राष्ट्रीय टीम का स्वागत किया। राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु देरासरिया, रा.का.स. श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा, श्रीमती निधी सेखानी व श्रीमती मंजु नौलखा की गरिमामयी उपस्थिति रही। कामरेज महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती अरूणा देरासरिया ने राष्ट्रीय टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

उधना – राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के पालघर एवं कामरेज के बैंचों के लोकार्पण कार्यक्रम के पश्चात् निकटवर्ती क्षेत्र उधना में विराजित शासनश्री साध्वीश्री सरस्वतीजी के दर्शनार्थ राष्ट्रीय टीम के साथ उधना पहुँचने पर उधना महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती श्रेया बाफना व उनकी टीम ने अल्प समय में सक्रियता के साथ उधना के गणमान्य व्यक्तियों एवं महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों को राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन की सूचना दी एवं अनायोजित कार्यक्रम की आयोजना की। शासनश्री साध्वी सरस्वतीजी ने कुमुदजी के कार्यों की सराहना करते हुए बधाई दी। महासभा के गुजरात प्रभारी श्री लक्ष्मीलालजी बाफना, उधना सभा उपाध्यक्ष श्री अर्जुनजी मेडतवाल, तेयुप अध्यक्ष श्री संजयजी बोथरा ने स्वागत करते हुए अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने शासनश्री साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उधना महिला मंडल एवं सभी पदाधिकारियों की सक्रियता के प्रति धन्यवाद प्रेषित किया। रा.का.स. श्रीमती मंजु नौलखा ने भी अपने गृह क्षेत्र में राष्ट्रीय टीम का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्रीमती महिमा चौरड़िया ने किया एवं आभार ज्ञापन कन्या मंडल संयोजिका सुश्री सलौनी बाफना ने किया।

बारडोली – महाराष्ट्र एवं गुजरात के क्षेत्रों के बहुआयामी कार्यों को संपादित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष बारडोली क्षेत्र की सार संभाल करने हेतु पहुँची। आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी ज्योति प्रज्ञाजी एवं समणी मानस प्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमती कुमुद कच्छारा ने बहनों को संस्था की चारों योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि 2023 में पूज्यप्रवर के मुंबई आगमन के समय बारडोली क्षेत्र भी त्याग-तपस्या की भेंट गुरु चरणों में अर्पित करे। समणी ज्योति प्रज्ञाजी ने कुमुदजी के सरलता-शालीनता भरे व्यक्तित्व के बारे में सभा को बताते हुए कहा कि आप एक श्रावक कार्यकर्ता व उपासिका है और आपने दो वर्षों से संस्था की बागडोर संभालते हुए अनेकों ऐसे क्षेत्रों की सार संभाल की है जो लंबे समय से राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन से अछूते रहे हैं। इसी क्रम में बारडोली क्षेत्र में उनके आगमन से मंडल में नये जोश का संचार हुआ है। बारडोली महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती कमला जैन ने स्वागत वक्तव्य दिया। अभातेयुप से श्री जयेशजी मेहता ने भी अभिव्यक्ति दी। इस यात्रा में राष्ट्रीय टीम से श्रीमती मधु देरासरिया व श्रीमती मंजु नौलखा तथा सूरत महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयंती सिंघी सहयोगी रही। कार्यक्रम में बारडोली क्षेत्र की बहनों के साथ पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रही।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सितम्बर 2019

सन्दर्भ ग्रंथ : महाप्रज्ञ प्रबोध – 141 से 151 पद्य अर्थ सहित
तेरापंथ का इतिहास पृष्ठ 470 से 495 तक
(प्रश्नोत्तर तत्व बोध तक तक)

अ. शब्द अन्वेषण (Word Search) :

प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में छिप हैं, उन्हें खोज कर चिन्हित करें व रिक्त स्थान में भरें :–

स	त्य	र	की	जी	द	त्यं	कि	ता	द्र	व्य	लि	पि	ह	पू
न्त	पं	च	ऋ	षि	स्त	व	न	फ	स	हि	म	स्तु	रा	भ
गु	ट	थि	व्या	क	र	ण	प्रा	त	रा	श	क्या	भी	ड़	ग
ण	न्त	कां	ठा	र	अ	कु	ब	सौ	प्र	बा	षा	ठ	मी	व
मा	भि	क्षु	स्रा	री	र्क	स्त	री	मु	दी	ण	श्रु	त	फू	ती
ला	पु	ह	क	द	मो	म्प	व	धा	ऊँ	मो	ड़	ह	सौ	की
शी	स	ध	ज्यो	दी	पां	जी	ल	न	स	धृ	र्षि	ति	क	जो
अ	ति	रि	क्त	द	न	जै	न	र	र्वा	सं	गौ	चा	णी	ड़
ब्र	म	प्र	भा	री	ति	ल	ह	अं	कृ	त्रि	स्कृ	ष्पा	ली	ता
ह्मे	र	गा	रि	म	ण	स्य	गि	सु	म	स्त	क्ष्य	त	र	सा
न्द्र	द्धि	त	ज	र	द	पू	आ	चा	र्य	म	ब	प्रां	ती	यु
न	र	क	म	या	ला	त	रे	न्नी	ज	न्य	या	क	ता	ध्वी
जी	भा	भ	रा	सा	चा	कि	ता	छा	क	हा	व	त	चं	ज
षा	ला	र	ह	का	धु	र्य	न्है	रा	या	रा	औ	छा	ल	गु
म	ल	स्य	नी	म्पा	सं	स्कृ	त	व्या	क	र	ण	ल	अ	रु

1. सुबह का नाश्ता .....
2. ..... पानी के प्रवाह की तरह निरन्तर आगे से आगे बढ़ती रहती है।
3. अष्टम देवलोक के देव .....
4. करेला और नीम चढ़ा की उपमा किसके लिए दी गई है .....
5. रैस अर्थात .....
6. राजस्थानी भाषा का वृहत्तम ग्रंथ .....
7. विघ्नहरण की ढाल का पूर्व नाम .....
8. जयाचार्य ने स्वामी भीखणजी की स्तुति में लिखी अनेक गीतिकाओं में उन्हें ..... कहा है।
9. टब्बा अर्थात .....
10. मरुस्थल में देव दर्शन के समान ..... के दर्शन दुर्लभ होते हैं।

महाप्रज्ञ प्रबोध

11. जयाचार्य के लिए एक दिशा निर्देशक व्यंग्य करने वाली साध्वी .....

12. अक्षरात्मक ब्राह्मी लिपी ..... है, व अचेतन है।

13. तेरापंथ के ज्ञानेश्वर .....

14. जयाचार्य का समग्र जीवन ..... की उपासना में बीता।

15. जयाचार्य द्वारा 11 वर्ष की अवस्था में रचित वृहत गीतिका .....

ब. किसने किससे कहा :-

1. लेश्या ध्यान का प्रयोग पुस्तक में व्यवस्थित नहीं है। तुम नया लिखो।

2. किसने कहा - मैं तो यहाँ महाश्रमण के लिए आया हूँ।

3. व्याख्या में आवश्यकतावश क्वचित संकोच व विस्तार भी किया है। किसने कहा ?

स. स्वाध्याय के पाँच भेद लिखें ?

द. कौन सम्यक्त्वी हैं, साधु-साध्वियों के लिए हितैषी है ?

नोट : उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम पता एवं फोन नं. अवश्य लिखें।
उत्तर महिने की 25 तारीख तक श्रीमती रमन पटावरी के पते पर अवश्य पहुँच जाए।
उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं साफ लिखें।
प्रश्न का उत्तर जितना पूछा जाए उतना ही दें।

श्रीमती रमन पटावरी
SILVER SPRING,
JBS 5 HALDEN AVENUE,
BLOCK - 1, 17-C, KOLKATA - 700105
मोबाईल : 9903518222 / 033-40620395
ई-मेल : raman.patawari@gmail.com

अगस्त माह के प्रश्नों के उत्तर

अ. रिक्त स्थान :-

1. चांदी रूपया	2. दयालु	3. न्यायाधीश	4. सम्मान, अपमान	5. जय सुजस
6. पुलाक-निर्ग्रन्थ	7. कंठाभरण	8. अनुशासन, दोष	9. कल्याणक	10. आत्मवेता

ब. मैं कौन हूँ ?

1. मोखजी खमेसरा
2. चैतन्य कश्यप फाउण्डेशन
3. युवराज जवान सिंहजी
4. उत्तमचंदजी बैंगानी
5. श्रीमद् रायचंद्र
6. युवाचार्य महाश्रमण
7. मूर्तिपूजक तपागच्छीय श्रावक गोकुल दास नानजी भाई गांधी

स. सन् 2007 में तेरापंथ के बौद्धिक वर्ग को जोड़ने के लिए

द. सावेक्ष अर्थवाद की अवधारणा को विकसित करने के लिए।

अधिवेशन के अन्तर्गत होने वाली महाप्रज्ञ प्रबोध प्रतियोगिता में गद्य, पद्य व शब्दों के अर्थ व 81 पद्य कंठस्थ करें।

मई माह की प्रश्नोत्तरी के भाग्यशाली विजेता

1.	गीता जिन्दल	नाभा	6.	शालिनी जैन	इरोड़
2.	सृष्टी बैद	उत्तर दिनाजपुर	7.	स्वाती नाहटा	चैन्नई
3.	पुष्पा नाहटा	उत्तर हावड़ा	8.	मोनिका नौलखा	लूणकरणसर
4.	मुन्नी कोठारी	चुरु	9.	डॉ. पुखराज सेठिया	साऊथ कोलकत्ता
5.	मानवी कोठारी	बालोतरा	10.	मंजुला बरमेचा	श्री डूंगरगढ़

जून माह के भाग्यशाली विजेताओं के नाम

1.	राजू भंसाली	उत्तर हावड़ा
2.	जयश्री भंसाली	जसोल
3.	मंजुलता नाहर	भीलवाड़ा
4.	विभा आंचलिया	नोखा
5.	सुमन छाजेड़	सूरत
6.	रेशमी देवी संकलेचा	बालोतरा
7.	सोनम वडेरा	टापरा
8.	सुषमा भादानी	हनुमानगढ़
9.	मंजु डागा	रायपुर
10.	मीनू बोथरा	लाडनूं

जुलाई माह के भाग्यशाली विजेताओं के नाम

1.	मोना देवी नागौरी	जयपुर शहर
2.	शांति देवी सालेचा	बेल्लारी
3.	रेखा बोरड़	अहमदाबाद
4.	समता खाटेड़	पचपदरा
5.	शांता टी. धोका	मुम्बई
6.	सरला बरड़िया	साउथ कोलकाता
7.	विनोद कोठारी	नई दिल्ली
8.	विमला कोठारी	गदग (कर्नाटक)
9.	चन्द्रकला दुगड़	कालू
10.	वर्षा बालड़	बालोतरा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

21,000	श्रीमती गुणमाला जैन (भिवानी) द्वारा भावना सेवा हेतु।
21,000	कामरेज महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
21,000	दार्जिलिंग महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
14,000	लुधियाना महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
11,000	रायगंज महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
5,100	श्रीमती कमला देवी स्व. श्री अर्जुनलालजी सिंघवी (भीलवाड़ा) द्वारा भावना सेवा हेतु।
5,100	जगराओ महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
5,100	पटियाला महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
5,100	गुप्त अनुदान भावना सेवा हेतु।
5,100	गुप्त अनुदान भावना सेवा हेतु।

अगस्त माह का संशोधन – श्रीमती प्रभा जसराजजी मालू–सरदारशहर के स्थान पर श्री डूंगरगढ़ पढ़ें।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

महामंत्री कार्यालय : श्रीमती नीलम सेठिया – 28/1, शिवाया नगर, 4th Cross, रेड्डीयुर, सेलम–636004, तमिलनाडु
मो. : 099524 26060 ईमेल neelamsethia@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती सरिता डागा – 45, जेम एनक्लेव, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर – 302 017
मो. : 094133 39841 ईमेल sarita.daga21@gmail.com

नारीलोक हेतु सम्पर्क करें : श्रीमती सौभाग बैद मो. : 080031 31111 श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा मो. : 096199 27369
नारीलोक देखें website : www.abtmm.org